बनारस से अनवरत प्रकाशित

ISSN : 9334-0970

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

बीआर/35/0029626

प्रान्ति इंडिया

www.prantiindia.com magazine@prantiindia.com +91 94-535354-95 (हिन्दी को समर्पित मासिक पत्रिका)

मई 2025 हिन्दी साहित्य का एक उदयमान तारा, नई पीढ़ी की आवाज़ को आकार दे रहा है। ₹ 50

यह भी पढ़ें..
टॉफी

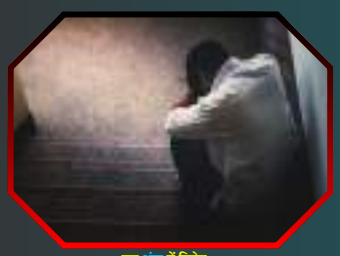

इस अंक में विशेष..
अब में अधूरा

पढ़ना न भूलें..
परदेस से मोहभंग

मातृ-दिवस विशेषांक

प्रान्ति इंडिया पुरस्कार पर आधारित संपादकीय

इस अंक में अवश्य पढ़ें..
"आखिर कौन थी प्रान्ति"

चयनित 501 कृतियों को मिलेगा
प्रान्ति इंडिया पुरस्कार

- विशेषांक : मातृ-दिवस पर आधारित काव्य रचनाएँ जरूर पढ़ें।

साहित्यिक
कार्यक्रम विशेष

Pranti

हमें भेजिए अपनी साहित्यिक पुस्तक-पत्रिकाएं

चयनित 501 कृतियों को मिलेगा प्रान्ति इंडिया पुरस्कार

नोट : अपनी प्रविष्टियाँ संपादकीय कार्यालय में भेजें।

प्रान्ति इंडिया ISSN : 9334-0970 | मई – 2025 | मूल्य : ₹ 50 | पृष्ठ : 22

प्रधान संपादक
आदित्य कुमार प्रसाद
(ए. के. प्रसाद)

संरक्षक व प्रबंधक : प्रदीप प्रसाद

विशेष संपादक : विनोद प्रसाद
विशेष सह-संपादक : विवेक रंजन
प्रबंध संपादक : दिव्यांजलि वर्मा
प्रबंध सह-संपादक : प्रेमलता चाँदना
आवरण अभिकल्पन : सौरभ कुमार

मुख्य कार्यालय
#495, पुरानी बाजार, बगौरा
सीवान-841404 (बिहार)

संपादकीय कार्यालय
जे11/125, ईश्वरगंगी
वाराणसी-221001 (उत्तर प्रदेश)

प्रान्ति इंडिया हिंदी साहित्य और संस्कृति को समर्पित एक जीवंत मंच है, जो हिंदी भाषा और साहित्य की समृद्धि को प्रदर्शित करने और युवा पीढ़ी में इसके प्रति गहरी जागरुकता और प्रेम बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। हमारा मिशन हिंदी साहित्य के विविध पहलुओं को उजागर करना और सामाजिक परिवर्तन में सकारात्मक योगदान देना है, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन और सांस्कृतिक उत्थान हो सके। ध्यान दें कि सामग्री संपादित करते समय यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी, यदि कुछ त्रुटियाँ रह गई हो तो इसके लिए स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादक उत्तरदायी नहीं होंगे।

पत्रिका की गुणवत्ता से संबंधित शिकायतों व सुझावों तथा वितरण, सब्सक्रिप्शन और विज्ञापन के लिए ई-मेल करें-
magazine@prantiindia.com
या संपर्क करें-
+91 94-535354-95
(सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रातः साढ़े नौ बजे से शाम छह बजे तक)

संपादकीय पत्र व्यवहार
प्रधान संपादक
जे.11/125 ए-1, ईश्वरगंगी
वाराणसी-221001 (उत्तरप्रदेश)
दूरवाणी : +91 7258072725

इस अंक में..

संपादकीय	04
	- प्रसाद
पेंटिंग ऑफ द अंक	05
	- निखिल जांगड़े
आखिर कौन थी प्रान्ति	06
	- ए. के. प्रसाद
परदेस से मोहभंग	09
	- विजय गर्ग
टॉफी	10
	- अर्चना त्यागी
वह माँ हैं	11
	- डॉ. प्रेमलता यदु
प्यारी माँ	12
	- वेदिका गुरव
माँ का प्यार	13
	- पूनम लता
गौरेया	14
	- शशि धर कुमार
अब मैं अधूरा	15
	- डॉ0 हरिवंश शर्मा
माँ की ममता	17
	- नेहा चौरसिया
पहचान	18
	- डॉ. मनोरमा चन्द्रा 'रमा'
हाइकु	19
	- रमा गर्ग
जुड़ शीतल	20
	- अरुण कुमार झा 'विनोद'

रचना आमंत्रण

अपनी रचनाओं के साथ एक फोटो, सम्पूर्ण जीवन परिचय तथा संपर्क सूत्र हमारे संपादक को ई-मेल करें।

editor@prantiindia.com

अधिकृत विक्रेता

वाराणसी : राजू मैगजीन स्टोर, लंका | अदिति बुक स्टोर, डीएवी | कमलेश बुक स्टॉल, मैदागिन

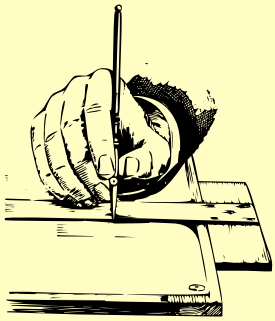

संपादकीय

प्रिय साहित्य साधक, नमस्कार!

हमारे लिए यह अत्यन्त गर्व का बिषय है कि हम प्रान्ति इंडिया की संगठन कार्यकारिणी की ओर से आपको अंतरराष्ट्रीय साहित्य महोत्सब—2026 में सादर निमंत्रण भेज रहे हैं। यह महोत्सब 10 जनबरी 2026 को बाराणसी स्थित पराड़कर भबन में आयोजित किया जाएगा। हम आशा करते हैं कि आप इस महान साहित्यिक आयोजन का अभिन्न हिस्सा बनेंगे और इस महायज्ञ में अपनी उपस्थिति से इसे गौरबान्बित करेंगे। यह महोत्सब सिर्फ एक आयोजन नहीं, बल्कि हिन्दी साहित्य के प्रति हमारी श्रद्धा और समर्पण का प्रतीक है। इस बिशेष अबसर पर हम उन 501 रचनाकारों का सम्मान करेंगे जिन्होंने साहित्य की बिभिन्न बिधाओं में अपने अभूतपूर्ब योगदान से हिन्दी को समृद्ध किया है और उसे बैश्बिक मंच पर प्रतिष्ठित किया है। हमें गर्ब है कि आप इस यात्रा का हिस्सा बनेंगे और हम सभी मिलकर इस काब्यात्मक यात्रा में कदम से कदम मिलाकर चलेंगे। हमारा दृढ़ बिश्बास है कि साहित्य का हर रूप समाज और संस्कृति का दर्पण होता है, जो संबेदनाओं और आदर्शों का सूक्ष्म चित्रण करता है। इस महोत्सब में साहित्य जगत के बिचारशील संबाद और मंथन के अबसर मिलेंगे, जो निश्चित रूप से हम सभी को नयापन और समृद्धि की दिशा में प्रेरित करेगा। इस महोत्सब में हम उन साहित्यकारों को सम्मानित करेंगे जिन्होंने कबिता, कहानी, निबंध, आलोचना, बाल साहित्य और अन्य बिधाओं में असाधारण योगदान दिया है। हम साहित्यिक सत्रों का आयोजन करेंगे, जहां रचनाकार अपने रचनात्मक अनुभब, बिचार और दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे। इन सत्रों से साहित्य के बिभिन्न आयामों पर गहन चर्चा होगी, जो सम्पूर्ण साहित्यिक समुदाय के लिए प्रेरणास्त्रोत बनेगा। यदि आप भी साहित्य के किसी क्षेत्र में सक्रिय लेखन कर रहे हैं—चाहे बह कबिता, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना या बाल साहित्य हो—तो हम आपको इस महोत्सब का अभिन्न हिस्सा बनने के लिए सादर निमंत्रित करते हैं। कृपया यदि आपकी कोई प्रकाशित पुस्तक या पत्रिका हो, तो उसकी एक हार्डकॉपी, साहित्यिक योगदान का बिस्तृत बिबरण, और एक उच्च गुणबत्ता बाली तस्बीर हमारे संपादकीय कार्यालय में शीघ्र प्रेषित करें। हमें यह घोषणा करते हुए अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि इस साहित्य महोत्सब में भाग लेने हेतु किसी प्रकार का प्रबेश शुल्क निर्धारित नहीं किया गया है। पंजीकरण प्रक्रिया पूर्णतः निःशुल्क है। यह महोत्सब साहित्य प्रेमियों के लिए एक उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रस्तुत करता है, जिसमें हर ब्यक्ति का स्बागत है। हम आपके आगमन का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। साहित्य के इस महामहोत्सब में आपकी उपस्थिति इसे और भी गौरबमयी और ऐतिहासिक बना देगी। आपका सहयोग इस आयोजन को नये शिखर तक पहुंचाएगा। कृपया इस पत्र को अपने साहित्यिक मित्रों और सहयोगियों के साथ साझा करें, ताकि इस महायज्ञ में अधिकाधिक रचनात्मक आहुति अर्पित की जा सके।

पेंटिंग ऑफ द अंक

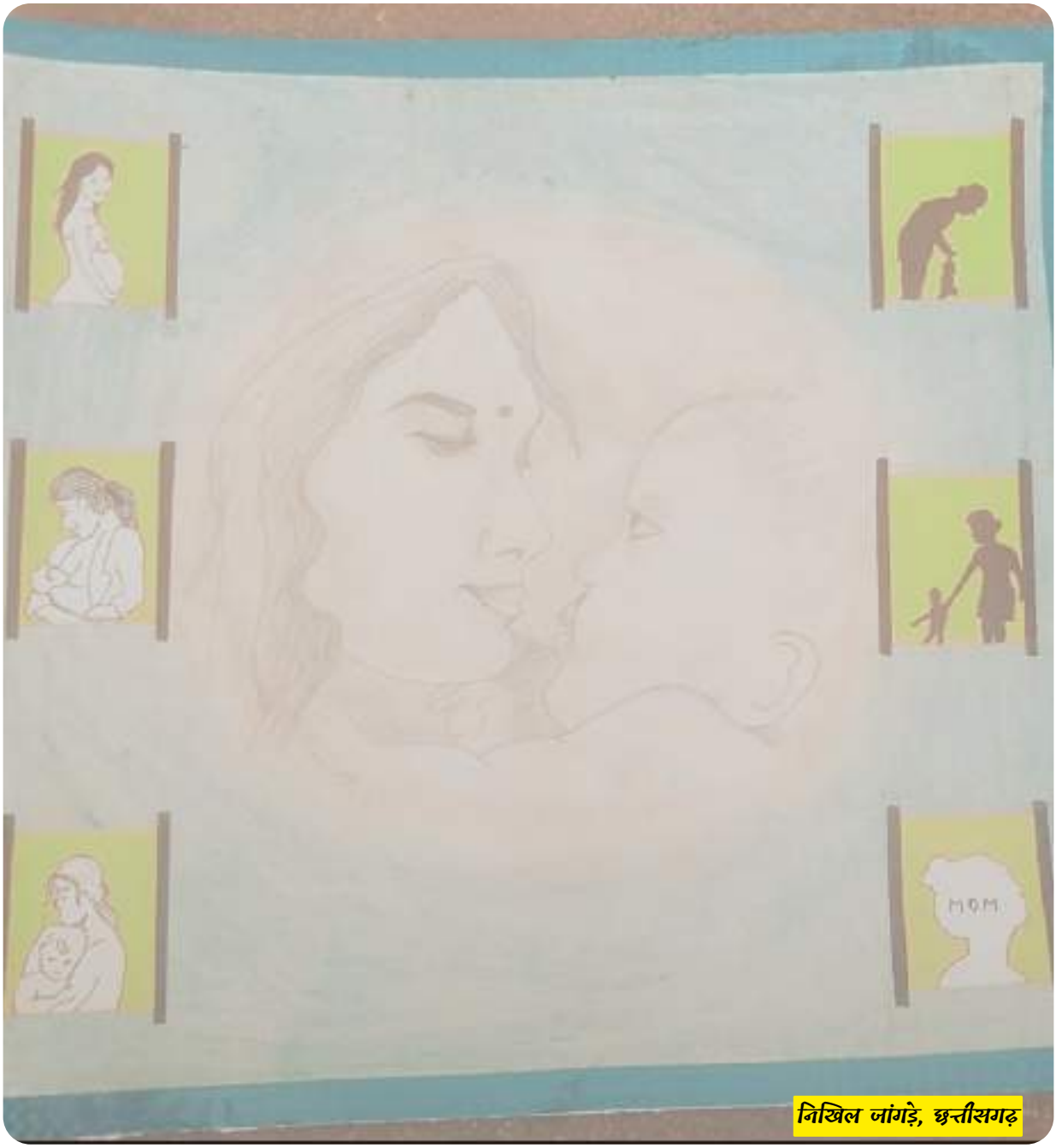

निखिल जांगड़े, छत्तीसगढ़

इनकी कला का उपहार 'प्रान्ति इंडिया का मासिक सब्सक्रिप्शन'

आखिर कौन थी प्रान्ति

– ए. के. प्रसाद

मेरे अप्रकाशित उपन्यास से उद्धरित ...

रक्षाबंधन की सुबह थी।

घर के बाहर हल्की-सी धूप चुपचाप फैल रही थी, जैसे आकाश भी इस दिन को बहुत ज़ोर से नहीं मनाना चाहता। जैसे वह जानता था कि इस दिन का कुछ हिस्सा हमेशा अधूरा रहेगा, कभी पूरा नहीं होगा।

मैं कमरे के कोने में बैठा था — जहाँ हर साल राखी के दिन थोड़ी चहल-पहल होती थी। लेकिन आज... पिछले कई सालों की तरह... सब कुछ शांत था।

शांत नहीं — खामोश।

जैसे कोई आह भीतर ही भीतर मचल रही हो, पर बाहर आने से डर रही हो।

मेरी कलाई खाली थी।

कई सालों से इस दिन मेरी कलाई खाली ही रहती है।

कभी-कभी लगता है, ये दिन अब मेरे लिए नहीं बना।

या शायद... मैं ही अब इस दिन के लायक नहीं रहा।

तभी किसी की हँसी कानों में पड़ी — नहीं, बाहर कोई नहीं था।

ये तो मेरे भीतर से आई थी — बहुत पुरानी हँसी थी वो, जो मेरे दिल के किसी कोने में दबी हुई थी, जैसे एक ज़ख्म हो जो कभी ठीक नहीं हुआ।

"भैया... एक बात कहूँ?"

नहीं, वो मेरे बचपन की कोई याद नहीं थी —

क्योंकि मेरी बहन... तो कभी बड़ी हुई ही नहीं।

लोग कहते हैं कि यादें उन पलों की होती हैं जो जिए गए हों।

पर मेरी एक याद ऐसी भी है... जो मैंने कभी जी ही नहीं।

मेरी बहन, जब दुनिया में आई, तब मैं बस एक साल का था।

और जब वो दुनिया से गई, तब मैं शायद कुछ समझने लायक भी नहीं था।

इतनी छोटी कि उसकी उंगलियाँ मेरी हथेलियों से भी छोटी थीं।

माँ कहती है —

"तुम उसे घूरते रहते थे, जैसे उसे पहचानना चाहते हो।

वो जब रोती थी, तुम भी रोने लगते थे।

और जब वो सोती थी, तो तुम पास लेट जाते थे — जैसे उसका कोई पहरेदार हो।"

कभी-कभी सोचता हूँ,

क्या इतने कम दिनों में भी कोई रिश्ता इतना गहरा बन सकता है

कि उसकी कमी ज़िंदगीभर सालती रहे ?

मेरे लिए उसका जाना सिर्फ एक मृत्यु नहीं थी,

वो मेरे जीवन की पहली और सबसे बड़ी चोरी थी।

मैंने अपना बचपन खोया, वो हिस्सा जो कभी बना ही नहीं।

उस खोई हुई बहन का आँगन, वो खोई हुई मुस्कान, हर छाया जो कभी पूरी नहीं हो पाई... सब कुछ सिर्फ ख्वाबों में बसा रह गया।

एक बार मैं माँ से पूछा था, "माँ, क्या उसे कभी तुमने महसूस किया?"

माँ चुप रही थी। उसकी आँखों में वो हल्की सी नमी आ गई थी, जो हमेशा उन पुराने घावों के साथ रहती है।

"तुमसे पहले, वो मेरी दुनिया थी। और जब वो चली गई, तो मेरा सब कुछ बिखर गया।"

माँ की यह बात मेरे दिल में गहरी उतर गई। मैं समझ नहीं पा रहा था कि कैसे एक छोटी सी बच्ची का इतना असर किसी की ज़िंदगी पर पड़ सकता है। क्या मैं कभी ऐसा कोई रिश्ता बना सकता था? क्या मुझे कभी वह अपनापन मिल सकता था, जो उसकी आँखों में था?

अब जब राखी आती है, मैं सोचता हूँ...

"अगर वो रहती तो?"

क्या मेरी कलाई अब भी सूनी होती?

क्या वो मेरी राखी बाँधकर कहती —

"भैया, तू तो अब भी वैसा ही बच्चा है!"

उसकी कल्पना करता हूँ —

जैसे वो मेरे साथ स्कूल जाती,

मेरे नाम से किसी को लड़ जाती,

मुझसे लड़ती भी, और फिर चुपके से खाना मेरी थाली में डाल जाती।

लेकिन सब कुछ बस... कल्पना है।

हर साल, जैसे ही राखी का दिन पास आता है, एक अनकही खालीपन मेरे भीतर घेर लेता है। वह खालीपन जो कभी पूरी नहीं होती, उस खोई हुई बहन के बिना। और मुझे अहसास होता है, कि उसकी कमी ने ही इस दिन को मेरे लिए और भी गहरा बना दिया है।

जब कोई कहता है,

"मेरी बहन ने आज मुझे राखी बाँधी,"

तो मैं मुस्कुराता हूँ।

पर उस मुस्कुराहट के नीचे एक लंबी, गहरी चुप्पी होती है —

जिसे कोई सुन नहीं सकता।

वह चुप्पी, उस धागे की कचोट, जो हर साल मुझे जकड़े रखता है, बिना किसी छूट के।

जिनके पास बहनें हैं,

उन्हें क्या मालूम,

बहन के बिना हर रक्षाबंधन

कितना नुकीला होता है।

मुझे नहीं पता कब से ये हुआ,

पर धीरे-धीरे मैं हर उस लड़की में

एक बहन ढूँढने लगा —

जो मुझसे दो मीठे शब्द बोल दे,

जो आँखों में स्नेह ले आए,

जो मेरे अकेलेपन पर थोड़ी सी छाँव बन जाए।

स्कूल में, कॉलेज में, हॉस्टल में —

हर बार जब कोई लड़की हँसते हुए कहती —

"तुम तो एकदम भाई जैसे हो,"

तो मैं हँस देता था...

पर अंदर कहीं कुछ टूट जाता था।

मैं ये जानता था कि वो सिर्फ कह रही है,

पर मैं सच में मान लेता था।

धीरे-धीरे, इस अधूरी खोज ने

मुझे एक अलग इंसान बना दिया —

भावुक, टूटा हुआ, लेकिन लोगों के लिए जीने वाला।

मैंने खुद को बाँटना शुरू किया—

हर उस लड़की को बहन बना दिया

जो थोड़ी-सी मासूमियत लेकर मेरे जीवन में आई।

शायद मैं अपनी बहन को हर जगह खोज रहा था —

हर चेहरे में उसकी झलक,

हर मुस्कान में उसकी गूंज।

आज जब मैं अपनी साहित्यिक संस्था के बैनर के नीचे

किसी छोटी बच्ची को किताब देता हूँ,

या किसी बहन को पढ़ाई के लिए मदद करता हूँ —

तो वो सब मैं उसी नाम पर करता हूँ,

जिसे मैंने कभी सही से जान भी नहीं पाया।

कभी-कभी, मैं सोचता हूँ कि अगर वो होती, तो क्या वह मेरे साथ इस संस्था का हिस्सा बनती? क्या वह कभी कहती, "भैया, तुमने इसे इतना बड़ा क्यों बना दिया?"

पर फिर मैं खुद को समझाता हूँ कि **उसकी यादें ही मेरे लिए इस संस्था का सबसे बड़ा योगदान हैं।**

क्योंकि वह नहीं रही,

पर उसका अधूरा रिश्ता

अब हर रिश्ते में पूरा करने की जिद बन गया है।

"और फिर, जैसे ही सारी यादें एक साथ उभरीं, एक नाम मेरे होठों ने फुसफुसाया — वह थी प्रान्ति..."

परदेस से मोहभंग

- विजय गर्ग

यह खबर चौंकाने वाली है कि बीते साल विदेश जाने वाले छात्रों की संख्या में 25 फीसदी की कमी आई है। जबकि अमेरिका जाने वाले छात्रों की संख्या में 36 और कनाडा जाने वाले छात्रों की संख्या में 34 फीसदी की कमी आई है। कमोबेश यही स्थिति ब्रिटेन की भी है। ये आंकड़े वर्ष 2024 के हैं। निश्चित तौर पर जब ट्रंप काल में उखाड़-पछाड़ के दौर के आंकड़े सामने आएंगे, तो वे ज्यादा चौंकाने वाले होंगे। एक समय था कि छात्रों में परदेस जाकर पढ़ाई करने का जुनून उफान पर था। **हर साल मां-बाप खून-पसीने की कमाई से और अपना पेट काटकर बच्चों को पढ़ने के लिये विदेश भेज रहे थे।** कहीं-कहीं तो खेत बेचकर और घर गिरवी रखकर बच्चों को विदेश पढ़ाने के लिए भेजने के मामले भी प्रकाश में आए। दरअसल, देश में बैंकों से एजुकेशन लोन मिलने की सुविधा ने भी छात्रों की विदेश यात्रा को सुगम बनाया। हर साल लाखों छात्र सुनहरे सपने लिये विदेश गमन कर रहे थे। ये जुनून पंजाब में विशेष रूप से देखा गया, जो कनाडा-अमेरिका आदि देशों में संपूर्ण भारत से जाने वाले छात्रों का साठ फीसदी था। जरूरी नहीं था कि ये सारे छात्र मेधावी थे और सब दुनिया के शीर्ष विश्वविद्यालयों में दाखिला पा रहे थे। इनमें **कई विश्वविद्यालय ऐसे भी थे जो सिर्फ विदेशी छात्रों से कमाई करने के मकसद से चलाए जा रहे थे।** वहीं कुछ विश्वविद्यालय ऐसे भी थे जो अवैध रूप से लोगों को विदेश भेजने वाले एजेंटों की कमाई का जरिया बने हुए थे। युवाओं को छात्र के रूप में इन देशों में भेजकर मोटी रकम वसूली जा रही थी। दरअसल, **धीरे-धीरे छात्रों और उनके अभिभावकों को हकीकत का अहसास होता चला गया।** उन्होंने महसूस किया कि वे मोटा पैसा खर्च करके जैसे-तैसे डिग्री तो पा सकते हैं, लेकिन ये नौकरी व ग्रीन कार्ड की गारंटी नहीं है। हां, कुछ छात्र किसी तरह छोटे-मोटे काम-धंधे करके अपनी पढ़ाई का खर्चा व घर का कर्जा उतारने का जुगाड़ जरूर कर लेते थे। दरअसल, धीरे-धीरे अमेरिका, ब्रिटेन व कनाडा सरकारों के दुराग्रहों व उनकी प्राथमिकताओं ने छात्रों को खुरदुरी जमीन के यथार्थ से रूबरू करा दिया। छात्रों को एजेंटों ने जो सब्जबाग दिखाए थे, उनकी हकीकत सामने आने लगी। इसके अलावा कोरोना काल के बाद बिखरती अर्थव्यवस्थाएं, नौकरी के आकर्षक प्रस्तावों में कमी, वीजा मिलने में हो रही दिक्कतें, इन देशों के गोरी चमड़ी वाले लोगों के भारतीयों पर बढ़े हमलों ने छात्रों में मोहभंग की स्थिति उत्पन्न कर दी। बीते साल **अमेरिका में कई भारतीय छात्रों पर नस्लीय हमले हुए।** कई छात्रों की हत्या हुई और अनेक घायल हुए। **कनाडा व ब्रिटेन में भारत विरोधी अभियानों तथा कनाडा में जस्टिन ट्रूडो के भारत विरोधी रवैये** ने भी छात्रों का मोहभंग किया। वैसे देखा जाए तो विदेशी मुद्रा अर्जित करने के बजाय हम हर साल अरबों रुपये इन देशों को भेज रहे थे। दूसरी ओर छात्रों के विदेश जाने के मोहभंग होने का सार्थक पहलू यह भी है कि अब ये प्रतिभाएं देश में रहकर राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकती हैं। **कुदरत का नियम है कि अपनी उर्वरा भूमि में ही पौधे अनुकूल वातावरण के चलते खिलते-निखरते हैं।** ये हमारे नीति-नियंताओं की विफलता है कि आजादी के सात दशक बाद भी हम देश को अंतर्राष्ट्रीय मानकों वाले विश्वविद्यालय नहीं दे पाये। सामान्य शिक्षा में कौशल विकास के गुण को विकसित नहीं कर पाए। छात्रों में सरकारी नौकरियां पाने की लालसा को रचनात्मक विकल्प नहीं दे पाये। अमेरिका की सिलिकॉन वैली से लेकर आईटी से जुड़ी तमाम बड़ी कंपनियों को भारतीय प्रतिभाएं चला रही हैं। **आखिर क्यों हम भारतीय मेधाओं को देश में ऐसा वातावरण नहीं दे पा रहे हैं, कि वे नई खोजों व अनुसंधान से देश को लाभान्वित कर सकें।** भारत दुनिया में सबसे ज्यादा युवाओं वाला देश है। यदि हम उनकी क्षमता,योग्यता और प्रतिभा का बेहतर उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, तो यह हमारी बड़ी नाकामी है। **देश के सत्ताधीशों को इस दिशा में गंभीरता से सोचना होगा कि क्यों छात्रों में विदेश जाने की होड़ लगी रहती थी।** छात्रों को अनुकूल वातावरण देकर ही विकसित भारत के संकल्प पूरे हो सकते हैं।

टॉफी

- अर्चना त्यागी

वह पगली थी। लोग ऐसा ही कहते थे। शायद उसकी बेतरतीब सी वेषभूषा देखकर। भाव भी वह अजीब तरह के ही बनाती थी। मैंने भी आते जाते हुए एक दो बार उसे देखा था। मैले कुचैले कपड़े, सूखा बदन और बिखरे बाल। कोई भी देखकर अनुमान लगा सकता था कि महीनों से उन्हें नहीं धोया गया था। हाथों पैरों पर जगह जगह मैल के चकते इस बात का प्रमाण देते थे कि सफाई जैसे शब्द से उसका कोई सरोकार नहीं था। बोलते हुए वह थोड़ा तुतालाती थी। उसकी इस कमी का लोग खूब मजाक बनाते थे। छोटे बच्चे उसके पास इकट्ठे हो जाते और अपनी समझ से उससे कुछ भी बुलवाते। मुश्किल शब्द उसे बोलने को कहते,

जिन्हे वह अपनी तोतली जबान से अजीब से ढ़ंग से बोलती थी। बच्चों को हंसते हुए देखकर वह भी ताली बजाकर हंसती। लेकिन उसके चेहरे पर हमेशा एक वीरानी सी छाई रहती थी। मैंने उसका चेहरा पढ़ने की कई बार कोशिश की। परन्तु उस वीरानी के सिवा उसके चेहरे पर कोई और भाव ठहरता ही नहीं था। हंसते हुए, रोते हुए चेहरे पर एक समान विरानी का ही भाव रहता। मैंने कभी सीधे बात नहीं की उससे। हां पड़ोस के बच्चों से उसकी बातें हर रोज सुनने को मिलती। बच्चों के मनोरंजन का माध्यम थी पगली। वह किसी से झगड़ा करती, आते जाते वाहनों पर पत्थर फेंक देती। बच्चों की हरकतों को देखकर गुस्सा हो जाती और भी न जाने क्या क्या। उसकी एक लड़की भी थी। चार या पांच वर्ष की रही होगी। उसे हमेशा उंगली पकड़कर अपने साथ ही रखती। उसके बाल कंघी करके चोटी बनाती। **लाड लड़ाती, खाना खिलाती और बच्चों के बीच में भी कभी नहीं जाने देती।**

न जाने किससे उसे बचाना चाहती थी। **शायद वक्त के थपेड़ों से।** जो वह स्वयं खाती आ रही थी। उसकी हरकतों से उसके मन की बात पढ़ना मुश्किल था। उसके पूर्व जीवन के विषय में भी जानकारी शून्य थी। तरह तरह की बातें करते थे लोग उसके बारे में। किसी से मैंने यह भी सुना था कि वह एक जमींदार घराने की बहू थी। गरीब परिवार से थी। पढ़ी लिखी भी नहीं थी। पति और ससुर की अय्याशी को सहन नहीं कर पाई और उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया। सास ने घर से बाहर कर दिया। राम जाने इस बात में कितनी सच्चाई थी। सच्चाई थी भी या नहीं। कुछ लोग कहते थे कि गरीब घर से थी और कुरूप भी इसलिए ससुराल वालों का व्यवहार ठीक नहीं था। **निरपराध मन को ऐसी ठेस लगी कि पागल हो गई।** जब लोगों ने उसे पहली बार देखा था तो गर्भवती थी। फिर सड़क पर ही बच्ची को जन्म दिया था। ये बातें सच थी या झूठ, नहीं जानता था। सच कुछ भी रहा हो परन्तु उस बच्ची के बाप से सवाल करने का बहुत दिल चाहता था कि उसने पैदा होने के बाद उसे ठोकरें खाने के लिए क्यूं छोड़ दिया। उस बच्ची का कोई भविष्य नहीं था। सड़क पर पैदा होकर, वहीं बूढ़ी होना या किसी दुर्घटना में चल बसना। कैसा क्रूर मजाक था प्रकृति का उन दोनों के साथ। पूरे शहर में उन्हें अपना कहने वाला कोई न था। मेरा मन बहुत परेशान होता था उनके बारे में सोचकर। **परन्तु चाहकर भी कुछ न कर पाता।** अपने रिश्तेदार के घर रहकर पढ़ाई कर रहा था। जैसे तैसे अपना समय निकाल रहा था। पैसे भी कम ही होते थे जिनमे मुश्किल से पढ़ाई का खर्च निकल पाता था। रिश्तेदार भी नाराज़ रहते थे कि मेरे पिता उन्हें मेरे रहने और खाने का अतिरिक्त पैसा क्यों नही देते ? पहली के बारे में फैली हुई। **ये बातें सच थी या झूठ, नहीं जानता था।** सच कुछ भी रहा हो परन्तु उस बच्ची के बाप से सवाल करने का बहुत दिल चाहता था कि उसने **पैदा होने के बाद उसे ठोकरें खाने के लिए क्यूं छोड़ दिया।** उस बच्ची का कोई भविष्य नहीं था। **सड़क पर पैदा होकर, वहीं बूढ़ी होना या किसी दुर्घटना में चल बसना। कैसा क्रूर मजाक था प्रकृति का उन दोनों के साथ। पूरे शहर में उन्हें अपना कहने वाला कोई न था।** मेरा मन बहुत परेशान होता था उनके बारे में सोचकर। चाहकर भी कुछ न कर पाता। अपने रिश्तेदार के घर रहकर पढ़ाई कर रहा था। जैसे तैसे

अपना समय निकाल रहा था। परन्तु **कल की घटना ने मेरे अंतर्मन को झकझोर दिया।** पगली के साथ एक दुर्घटना हुई थी। उसका भावशून्य चेहरा तब से ही मेरी आंखों के सामने घूम रहा है। जबसे छोटी बहन ने मुझे उसके बारे में आकर बताया। जानकर दुखी होने के अलावा और कर भी क्या सकता था।

न जाने कहां से उसकी बेटी टॉफी कहना सीख गई थी। बार बार टॉफी की जिद कर रही थी। रो रो कर उसके पैरों से लिपट रही थी। सड़क पार करके एक दुकान थी, उसी की ओर बार बार इशारा कर रही थी। उस बिचारी को क्या मालूम था कि क्या होने वाला है ? बेटी की जिद पूरी करने, उसकी उंगली की दिशा में चल पड़ी। दुकान पर पहुंचकर बच्ची टॉफी टॉफी कहकर मचलने लगी। **दुकान वाले ने दया करके कुछ टॉफी उसकी हथेली पर रख दी। खुशी के मारे उछल पड़ी और अगले ही क्षण सारी टॉफी उसकी हथेली से फिसलकर सड़क पर बिखर गई। बेटी को सड़क किनारे छोड़ पगली टॉफी उठाने दौड़ पड़ी। तेज रफ्तार से चलते एक ट्रक ने तेजी से टक्कर मारी और उसकी जीवन लीला वहीं समाप्त कर दी।**

धुआंधार दौड़ती सड़क पर कौन था उसकी परवाह करने वाला। उसकी भावना को समझने वाला। क्या हुआ होगा सोचा नहीं जा सकता। कुछ ही देर में भीड़ इकट्ठी हो गई। बच्ची जो अब तक दूर खड़ी थी, मां के पास आई और उसके हाथ से टॉफी लेने लगी। **भीड़ को देखकर मां के खून से लथपथ शरीर के ऊपर लेटकर रोने लगी।** दुकान वाले ने अपनी दुकान में ले जाकर दूसरी टॉफी दी। इतने में पुलिस आ गई। पगली के मृत शरीर को उठा कर अस्पताल भेज दिया गया, पोस्टमार्टम के लिए। बच्ची को बालगृह में छोड़ दिया गया। **समाज के नामचीन लोगों ने यह कदम उठाया और उनके कर्तव्य पालन की खबरें अगले दिन सभी समाचार पत्रों की सुर्खियां बन गई, पगली की कहानी।** मैं उस अनजान बच्ची के बारे में सोचता रहा। **एक टॉफी की कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी उसे ? क्या एक टॉफी की कीमत जान पाएगी कभी? मां जो उसके लिए अपनी जान कुर्बान कर है, उसको ला पाएगी कहीं से ? कौन उसे दिन भर सीने से लगाए रखेगा? कौन लाड लड़ाएगा ? कौन बुरी नज़र से बचाएगा ? अब कौन लाकर देगा उसे अपनी जान पर खेलकर टॉफी ?**

वह माँ हैं

उसे गणित नहीं है आता
फिर भी वह खुशियों को दोगुना
और दुख को कर देती है आधा ।।

गिनती में हर वक्त, वह करती है गड़बड़ी
मैं मांगू रोटी दो, तो वह परोस देती है चार।।

जोड़ने घटाने में भी, वह बहुत है कच्ची
फिर भी न जाने कैसे, राशन,दूध, फल और
सब्जियों के हिसाब कर लेती है पक्की ।।

चंद घंटे पहले की बातें, वह भूल है जाती
लेकिन जो मैं बैठ जाऊं, दो पल उसके साथ
मेरे बचपन की सारी बातें, वह करती है याद।।

करती नहीं, कभी खुद की परवाह
लेकिन रखती है पूरे घर का ख्याल
बांध कर चिल्लर आंचल में
वह खुशियां बांटती है बेहिसाब ।।

वह मां.....हैं
उसे नहीं आता है कोई हिसाब
जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग ।।

-डॉ प्रेमलता यदु
+91 7587271678

प्यारी माँ

प्यार दुलार से भरा मकान
कण कण में जिसका साक्ष्य
जहां तहां मां मां की पुकार
जिसका है अनोखा प्यार
वो मेरी प्यार भरी प्यारी मां

मां हैं त्याग समर्पण और अनंत प्रेम की मूर्त
मां देती जीवन का ज्ञान है जिसमें जीवन का सार
ख़ुद को कही पीछे छोड़ कर हैं हमारे साथ
मां को भी मां की आती होगी न याद
ऐसे ही नहीं कहा जाता होगा मां को भगवान

खुद की तकलीफों को भूल कर मेरे दर्द में रोती
मेरे रोने पर अपने आंचल में समा लेती
कहीं भटक जाने का भय नहीं बांध रखी है डोर
नटखट अल्हड़ बालक के किस्से सुनाती
सहलाते हुए बचपन की कहानी बताती

प्यार दुलार से भरा मकान
कण कण में जिसका साक्ष्य
जहां तहां मां मां की पुकार
जिसका है अनोखा प्यार
वो मेरी प्यार भरी प्यारी मां

– वेदिका गुरव
कला संकाय, तृतीय वर्ष (भैंसदेही)

माँ का प्यार

माँ का प्यार होता जिनके दामन में,
ख़ुशनसीब इंसान होता वह जहां में।
माँ का प्यार सबसे बड़ा उपहार है,
ईश्वर की इनायत, जीवन का आधार है।
माँ की ममता की शीतल छाँव में,
बेशुमार वात्सल्य प्रेम होता।
माँ का हृदय तो पवन होता,
माँ के चरणों में स्वर्ग होता।
इसमें कोई संदेह नहीं,
माँ से सारा संसार होता।
माँ नारी की पहचान होती,
वेद पुराण की चेतना होती।
घर आँगन की है तुलसी माँ,
मां की वाणी गीता सी वाणी होती।
माँ वह पवित्र रिश्ता है,
जिसके बिना जीवन अधूरा है ।देती है हमें जीवन दान,
माँ तो बरगद की छाया है ।
माँ ही पहली शिक्षक होती,
गंगा की निर्मल धारा होती ।
माँ सिर्फ एक शब्द नहीं,
माँ ममता की महासागर होती। माँ श्रद्धा की आदिशक्ति होती, सहनशीलता के प्रतिमूर्ति होती। पूरी सृष्टि न्योछावर जिनपर
माँ कविता की सहज वेदना होती।
ना सिर्फ मदर्स डे पर माँ का सम्मान करें ,
हर वक्त हम उनका सम्मान करें। नौ महीने अपने रक्त से सींचकर बच्चों को जीवनदान प्रदान करती।
बहुत नसीब वाले होते हैं,
जिन पर माँ स्नेह भरा हाथ होता।
उसका जीवन नर्क है ,
जिसके दिल में माँ का सम्मान नहीं होता।
माता पिता का सम्मान करें,
उनसे ही बनी तेरी पहचान।
माँ के चरणों में स्वर्ग बसा है,
इसके सिवा न कोई दूजा धाम।
माँ का प्यार, ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है।

-पूनम लता
+91 9470932997

गौरैया

माँ...
हाँ वही!
जो कभी "गौरी" थी, कभी "सीता",
अब गांव की टूटी खाट पर
फटी साड़ी में लिपटी गीता।
जिसकी प्रेरणा
कभी तुलसी के चौरे से उठती थी,
अब गैस सिलिंडर की सब्सिडी में
सिमट के रह गई है!
बोलो भाई,
किसने देखा है माँ का सपना?
वो जो खुद सपनों को
रोटियों के साथ बेल देती है
और कहती है —
"तू पढ़-लिख ले बेटा,
मैं तो खेत में मजूरी कर लूंगी!"
माँ,
जो भरी दुपहरी सूरज में
कंधे पे घास का गठ्ठर टाँग के चलती है,
और फिर भी मुस्करा के
बच्चों को दूध में पानी मिला के पिलाती है!
माँ प्रेरणा है...
किसी किताब की नहीं,
उस पुरानी डायरी की है
जो अलमारी के कोने में रखी है —
जिसमें लिखा है —
"आज बेटा स्कूल गया, आज बिटिया को पहली बार चप्पल मिली..."
वो प्रेरणा है
जो कहती नहीं, सहती है।
जो कभी विरोध नहीं करती,
बस चुपचाप अपनी ज़िंदगी
तुम्हारी ज़िंदगी में ढाल देती है।
अरे ओ नवजवानों!
तुम्हारी मोटिवेशनल वीडियो से पहले
माँ की आवाज़ सुन लो —
जो कहती है —
"चल उठ! सूरज चढ़ आया... और मेरी रसोई ठंडी है!"
माँ एक प्रेरणा है...
जो किसी मंच से नहीं बोलती,
लेकिन हर सुबह
तुम्हारे जूते के नीचे
सपनों की चप्पल रख जाती है।

-शशि धर कुमार
+91 9990504600

अब मैं अधूरा

– डॉ0 हरिवंश शर्मा

घोसले में चिड़िया अपने बच्चों को खिला रही थी । एक छोटी टहनी के सहारे बने इस घोसले में दो नन्हें परिन्दों की केवल चोंचें दिखाई दे रही थी । जब चिड़िया उड़कर वहाँ आकर बैठती तो उसकी चोंच में कुछ खाने की वस्तु होती । उसके आते ही उन दोनों नन्हों की चहचहाट बढ़ जाती । कई बार चिड़िया उनको बारिश और हवाओं से बचाने के लिए अपने परों की ओट में छिपाकर बैठ जाती तो कभी दूसरे पक्षियों से बचाने के लिए लड़ाई भी करती ।

यह देखकर मैं सोंच में पड़ गया कि आखिर इस माँ का भला क्या स्वार्थ हो सकता है। इन बच्चों को माँ के बुढ़ापे का सहारा भी कैसे कहूँ क्योंकि ज्यों ही ये उड़ने लगेंगे स्वतंत्र हो जाएंगे । इनको भला मां की चिन्ता होगी भी या नही । खैर इनकी दुनिया तो मानव की दुनिया से अलग ही होती है । ऐसे दृश्य को देखते समय मेरे मन में कई विचार आए – गए । साथ ही यह भी खयाल आया कि आखिर इन बेजुबान माँओं के अन्दर ऐसे ममत्व के संस्कार किसने दिए होंगे।

वहीं मनुष्य की दुनिया कितनी अलग है । प्रकृति का सबसे ज्ञानवान प्राणी मनुष्य है। वह पशु – पक्षी सभी के दुख – दर्द महसूस कर सकता है फिर अपने ही आसपास को क्यों भूलता जा रहा है । खून के रिश्ते अब बंदिशे तोड़ने को आतुर है । हर बलाओं से अपने बच्चों को बचाने वाली मां ही नही अपितु पिता भी पराये से हो चले है । ऐसे में ओल्ड एज होम की जरूरत आन पड़ी हैं आखिर कैसे? वह इतना कठोर कैसे हो गया । अपने हृदय से चिपकाकर रखने वाली माँ की पीड़ा वह अपने हृदय से कैसे निकाल पाया । मां को भुलाना कितना सरल हो गया है । बच्चों के बड़े होते ही मां का नाम
" बुढ़िया " में तब्दील हो जा रहा है । लोरी सुनाकर सुलाने वाली मां के उम्र के इस पड़ाव पर हिस्से में सिर्फ झिड़कियां और मन मसोसती सिकसियां ही बची रह जाती है । इसका यह कतई मतलब नही कि सभी के साथ ऐसा ही होता है । अपनी – अपनी किस्मत और अपनी – अपनी दुनिया है । मै कभी अकेले में सोचता हूँ कि मां के लिए कोई कठोर कैसे हो सकता ।

मुझे याद है । मेरे पढ़ाई करने के दौर में कुछ तंगी आ गई । पिताजी कमजोर हो चले थे । कारण था कि मेरे माता – पिता ने अपने एकमात्र अठारह वर्षीय पुत्र को खो चुके थे । इसके कई साल बाद मेरा जन्म हुआ था । ऐसे में डूबते को तिनके का सहारा बनकर मै आया तो था परन्तु पुत्र वियोग में टूट चुके थे ।

तंगी और मेरी पढ़ाई के बीच में सबसे बड़ा सहारा मेरी माँ थी । पढ़ाई में कोई बाधा न आए इसके लिए उन्होंने पिताजी से कभी भी अपनी साड़ी तक की माँग करते मैने कभी नहीं सुना । फीस जुटाने के लिए साड़ी के मिले पैसों को वह मिट्टी के बर्तनों में छिपाकर रख लेती थी । साथ ही अपनी पुरानी फटी साड़ी के दोनों छोर सिलकर बीच के फटे हुए हिस्से को निकाल दिया करती थी । जिससे वह कुछ माह पहनने लायक हो जाती थी । उसी फटी हुई रिपेयर की गई साड़ी का पल्लू मेरे बचपन में छिपने के काम आता था । इतना ही नही इस पल्लू से ही वह धूल – मिट्टी में से खेलकर आने पर पोंछ दिया करती । साड़ी के एक कोने में बंधी पोटली ही उनका बैंक हुआ करता । जरूरत पड़ने पर हम लोगों को चीज खरीदने के पैसे भी इसी पोटली मे हुआ करते थे।

गर्मी के मौसम में वह कभी – कभी इसी पुरानी साड़ी के पल्लू से हवा करती । जाड़े में में उनके आंचल में छिप जाया करता । जब कभी हम पूँछते कि एक समय के बाद लोग मर जाते है । तुम्हारे मरने पर मेरा क्या होगा? ऐसे प्रश्नों पर वह हँस दिया करती थी और कहती – " अभी मरे जा रहे " उनके घुटनों पर सिर रखकर मै उदास हो जाता तो वह तरह – तरह से दिलासा दिया करती । इसी बीच वह कहती कि – "तुम्हारी शादी करेंगे । " पोते पोतियों को खेलाएंगे । फिर कही . . . . . । कभी वह कहती कि – " सब कुछ ऊपर वाले के हाथ में है । "

लेकिन मुझे यह कतई नही मालूम था कि समय का क्रूर मजाक फिर मेरे साथ होने वाला है । मैं अपने पैरों पर खड़ा होकर उनके लिए कुछ कर सकूँ इसी संघर्ष मैं डूबा हुआ था कि एक दिन वह अचानक बेहोश होकर गिर पड़ी । बिस्तर पर लिटाया गया । डाक्टर ने उनका इलाज किया तो पता चला कि उनको माइनर अटैक था । अभी इससे उबर ही रहे थे कि अचानक उनके जबड़े की हड्डी जकड़ गई । वह बोल नहीं पा रही थी । मै अवाक् था । आस पास के लोगों के लिए मदद के लिए बुलाया । लोग इकट्ठे हो गए थे । चूंकि पिताजी घर पर नही थे । ऐसे में पिताजी को बुलाने भेजा गया था । यह स्थिति करीब तीन घण्टे बनी रही । अब वह सुस्ती महसूस कर रही थी । तभी आई एक जम्हाई ने उनका जबड़ा फिर से सामान्य कर दिया ।

वह मेरे चेहरे से ही सब कुछ पढ़ लेती थी । उनको जब भी लगता मै कुछ परेशान हूँ तो वह दिलासा देती । कहती ईश्वर इतना क्रूर नही हो सकता । लेकिन समय की क्रूरता किसको मालूम थी मेरी पढ़ाई और तैयारी चरम पर थी । मां के गले में कुछ अटकने जैसी समस्या हो रही थी । सरकारी अस्पताल में मैं उनको दिखाने गया । नाक – कान – गले के डाक्टर जयसिंह ने जांच की और फिर मां को बाहर बैठाने को कहा । मै उन्हें बाहर की बेंच पर बैठा कर डाक्टर के पास गया । डाक्टर ने मुझे पूछा – " क्या करते हो ? "

"जी, पढ़ाई ।"

"एक बात बताऊँ । "

"जी सर । "

" अपनी मां को आप बाहर दिखा लो ।

मै उनकी बातों को एकटक सुन रहा था । ऐसा लग रहा था कि मेरे पैरों के नीचे से कोई आहिस्ता – आहिस्ता जमीन खींच ले रहा है ।

डाक्टर ने धीरे से कहा – " अपनी मां को मत बताना । "

"उनको कैंसर है, गले का । "

डाक्टर के कहने भर से मेरा संसार उजड़ गया था । मैं अपने सारे दुख – दर्द उनको बताता था और वह हर एक का समाधान बताती थी । इस दुख इस पीड़ा का समाधान बताने वाला मेरे पास कोई नहीं था । बिना आंसुओं के ही आंखे और हृदय दोनो रो रहे थे बिना कोई शोर किये । वह कभी – कभार अपने बारे में हम लोगों को बताया करती थी कि जब से उनका ब्याह हुआ था । उन्होंने केवल संघर्ष ही किया था । जीवन के अंतिम पड़ाव में ऐसे संघर्ष की उम्मीद नहीं थी । यह संघर्ष तो जीवन – मरण का था ।

माँ को पता लग गया था कि उन्हें कैंसर है । बचना मुश्किल है । लेकिन उन्होंने मुझे इसका आभास नहीं होने दिया । उन्होंने पिताजी से बताया था कि मेरे बाद बच्चों का खयाल रखना । जांच में पता चल चुका था कि चौथी स्टेज का कैंसर है । उनका दर्द बढ़ चला था । बचपन से बड़े होने तक अपने आंचल में मुझे छिपाने वाली मां अब हमसे अपनी भयानक पीड़ा को छिपा रही थी । दर्द इतना भयानक होता जा रहा था कि उनकी यह पीड़ा अब चित्कार में बदल गई थी । खून की उल्टियां होने लगी थी । सिर के बाल झड़ चुके थे । आज – कल – परसों में समय बीत रहा था । पैसों की तंगी के चलते दो बीघा खेत भी बेचना पड़ा । पूरे कुनबे में सबसे सुन्दर दिखने वाली मेरी मां अब एकमात्र हड्डियों का ढांचा रह गई थी । मेरे खानदान की सबसे अधिक पढ़ी – लिखी एक मात्र महिला थी । उन्होंने ही शिक्षा के महत्व को बखूबी समझा था । जिसे समय ने परवान चढ़ाया । जो उनके जाने के बाद का

हिस्सा था । जिसके चलते घर में प्रोफेसर , वकील और इंजीनियरों की कतार लग गई । क्रूर हवाओं के झोंको में उनकी सांसे हम सबको अलविदा कहकर विलीन हो गई थी ।

उनका अंतिम संस्कार हो चुका था । मैं अब बिखरे तिनको की तरह अपने को ही बटोरने में लगा था । उनके दर्द की असहनीय पीड़ा ने झकझोर दिया था । मुझे पुचकार कर अपने में समेटने वाला वह आंचल चिता की लपटों में जल चुका था । मै उनको तलाशते कई बार शमशान भी गया । शहर की सड़कों पर घूमा । खूब जोर – जोर चिल्लाकर आवाज भी लगाई लेकिन वह अब सुन नहीं रही थी । जो मेरी हल्की आवाज भर से जाग जाया करती थी । आज वह चिरनिंद्रा में लीन है । जो शायद अब नही लौटेगी । पहले मेरे बिना वह अधूरी थी , उनके बिना अब मैं अधूरा ।

माँ की ममता

कहती थी शहर जाना है
कुछ कर दिखाना है
मां तुम्हारे खातिर अपने कमाई की साड़ी लाना है

गई भी कई ख्वाब लिए
आंखों में नए शहर का एहसास लिए
उमंगों से भरी थी मैं, शहरों की भीड़ - भाड़ में
पर अब ना वह उमंग रही ना एहसास
अब लगता है कब आऊं तेरे पास

मां तेरे हाथों की रोटी खाए जमाना हो गया
नींद नहीं आती रातों में, याद तेरी बहुत आती है
शहर के ए.सी में भी, मां तेरे आंचल के छांव जैसी सुकून नहीं आती

अब सुबह जल्दी कोई जगाता नहीं
सात बज गए कह कर कोई उठाता नहीं
ना चाय पी लो कहता है, और ना ही आधी रोटी मांगने पर एक रोटी खिलाता है

शाम को घर जल्दी आना ;कोई कहता नहीं
अब यह पार्टी भी कुछ भांता नहीं
जगमगाते शहरों में भी मेरी दुनिया में अंधकार है
मां तेरे बगैर मेरा जीवन ही बेकार है ।।

-नेहा चौरसिया
सीवान (बिहार)

पहचान

सदा सफल शुभ काज से, मिले नई पहचान।
निर्मल रखकर आचरण, बनना दिव्य महान।।

हाव भाव पहचान कर, करें मनुज अनुराग।
जब धोखा निज से मिले, करना उनका त्याग।।

सत्य राह पर चल सदा, श्रेष्ठ कर्म को धार।
ध्येय रूप पहचान कर, लेना भाग्य सँवार।।

संसाधन पहचान कर, जो करते उपभोग।
दिव्य वस्तु से हो भला, नूतन करें प्रयोग।।

जगत दृश्यता देखलो, सब बनते अनजान।
अपने मतलब साधते, हृदय भाव पहचान।।

नात रूप पहचान कर, छोड़ चलें अभिमान।
मर्यादा पालन करें, जग में सदा सुजान।।

सही गलत में भेद है, सकल कर्म आधार।
मनु प्रवृत्ति पहचान कर, निभा धर्म जग सार।।

बने श्रेष्ठ पहचान नित, ऐसा करें प्रयास।
बहुमुख प्रतिभा के धनी, बन जाएँ अति खास।।

नित्य परिश्रम जो करे, बढ़े जगत सम्मान।
ईश कृपा हरदम मिले, भव्य बने पहचान।।

दीप्तियुक्त पहचान से, करें भाग्य संचार।
कहे रमा ये सर्वदा, मिले खुशी भरमार।।

- डॉ. मनोरमा चन्द्रा 'रमा'
+91 9589403502

हाइकु

यह एक जापानी काव्य रूप है, जो तीन पंक्तियों में लिखा जाता है। इसका पारंपरिक ढांचा 5-7-5 अक्षरों का होता है, यानी पहली पंक्ति में 5 अक्षर, दूसरी पंक्ति में 7 और तीसरी पंक्ति में 5 अक्षर होते हैं। हाइकु संक्षिप्त होते हुए भी गहरी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का एक सुंदर तरीका है। यह प्राकृतिक सौंदर्य, जीवन की साधारणताएँ और भीतर की गहरी संवेदनाओं को बहुत प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करता है। हाइकु जैसे संक्षिप्त काव्य रूप में व्यक्त करना बेहद प्रभावी होता है, जिसे हमने माँ तुझे प्रणाम थीम पर व्यक्त किया है। छोटे शब्दों में गहरी भावनाएँ समाहित होती हैं, और एक सरल सा हाइकु जीवन के सुखद पल का हमारे मन में गहरा प्रभाव छोड़ता है। माँ हमेशा हमारे आसपास होती हैं, जो हमें हमेशा प्यार करती हैं ,प्रेरणा भी जीवन पर्यंत और उनकी कमी हमको हमेशा उनको याद दिलाती है। मैंने लिखे कुछ हाइकु आपको पसंद आएंगे-

बचपन था
माँ का खजाना
बस यादें ही

माँ की मुस्कान
प्रेम की गहराई
हर पल ही

हर सिंगार
माँ के आँगन में ही
महका रहा

धरती माँ
रोती प्रदूषण से
कौन बचाए

दिल धड़का
माँ जब न दिखे
मन उदास

-रमा गर्ग
शिकागो, अमेरिका

जुड़ शीतल

- अरुण कुमार झा 'विनोद'

डॉ. विभास क्षण भर को समझ नहीं पाए कि पत्नी ने चाय बनाने के लिए गैस जलाने से उन्हें मना क्यों किया?

डॉ. विभास और उनकी पत्नी डॉ. दिव्या दोनों विश्वविद्यालय में भौतिकी विभाग में प्रोफेसर हैं। परिवार यूनिवर्सिटी कैंपस में ही रहता है। दिनचर्या इनकी निस्संदेह बहुत व्यस्त होती है परंतु अवकाश के क्षणों में ये अपने पारिवारिक रीति-रिवाजों की चर्चा कर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। घर में प्राय: हर तीसरे दिन डाइनिंग टेबल पर कोई न कोई ऐसा मसला निकल ही आता है जिसके समाधान के क्रम में इन्हें अपने बड़े-बुजुर्गों के मुख से निकली हुई बातें याद आती हैं और ये बेखटके उनका अनुसरण करते हैं। पारिवारिक पृष्ठभूमि इनकी अभिजात्य प्रकृति की रही है और सोच इनकी वैज्ञानिक बोध से आप्लावित है। भौतिकी के छात्र इनकी प्रतिभा की कद्र करते हैं और इनके मार्गदर्शन में शोधकार्य का अवसर मिल जाने पर स्वयं को विशिष्ट मानते हैं।

इस वर्ष जुड़-शीतल के दिन डॉ. विभास अपने लिए चाय बनाने खातिर किचन जा रहे थे। डॉ. दिव्या की नजर उन पर पड़ी। पत्नी ने पति को टोका - "आज आप प्लीज अपने लिए चाय का कोई दूसरा इंतजाम कर लीजिए। आज जुड़-शीतल का पर्व है। आप देख सकते हैं कि मैंने रसोई की साफ-सफाई की है, चूल्हा को जल से पवित्र किया है और बासी भोग चढ़ाकर पूजा की है।"

डॉ. विभास ने उत्तर दिया– "हां, मैंने भी शीतला माता को प्रणाम किया है।"

डॉ. दिव्या- "आप जानते हैं कि पर्व भले प्रतीकात्मक होते हों पर इनके साथ गहराई में हमारी भावनाएं जुड़ी हुई होती हैं। चूल्हा प्रति-दिन सुबह-शाम हमारे लिए तपता है और इसी से हमें सिद्ध भोजन की प्राप्ति होती है। हमें इस सेवा के लिए चूल्हा को धन्यवाद कहना चाहिए? जुड़-शीतल पर्व हमें यही तो सिखाता है। इस दिन लोग एक दूसरे पर जल छिड़कते हैं, खुद को शीतल बनाने के लिए विविध प्रकार के यत्न करते हैं और इसी क्रम में चूल्हा को भी एक दिन शीतल रखा जाता है तथा बासी भोग (एक दिन पुराना शीतल भोज्य पदार्थ) भेंटकर कृतज्ञता ज्ञापित की जाती है।"

डॉ. विभास – "आपकी राय से मैं सहमत हूं परंतु समय के साथ चूल्हा के आकार-प्रकार, तकनीक और काम करने के इसके तरीके में अनगिनत बदलाव आए हैं। लोगों ने इन्हें खुले दिल से स्वीकारा है। हमारी जिंदगी इन बदलावों से आसान हुई है। आपको नहीं लगता कि अतीत के कुछ रस्मों को भुलाकर हमें समय की वर्तमान धारा का अनुसरण करना चाहिए?"

अबकी पत्नी ने पति के मुंह पर हाथ रख दिया- "आपकी बात दुरुस्त है परंतु भौतिक सुख भर नसीब हो जाने से जिंदगी की कहानी पूर्ण नहीं हो जाती। बचपन से अपने परिवेश में जो क्रियाकलाप हम देखते-सुनते आए हैं, जिन रीति-रिवाजों के साथ जिंदगी में हमारा विश्वास पनपा-पला है, उन्हें नजरअंदाज कर आगामी पीढ़ी को हम क्या संदेश दे पाएंगे? चूल्हा को आप कोई भी नाम दे दें, काम तो वही रहेगा, इसीलिए ...

साहित्यिक
मासिक पत्रिका

प्रान्ति इंडिया का वार्षिक सब्सक्रिप्शन

~~MRP ₹2500~~

आपके घर पर मात्र ₹1100 में

एक साल में 12 पत्रिकाएं

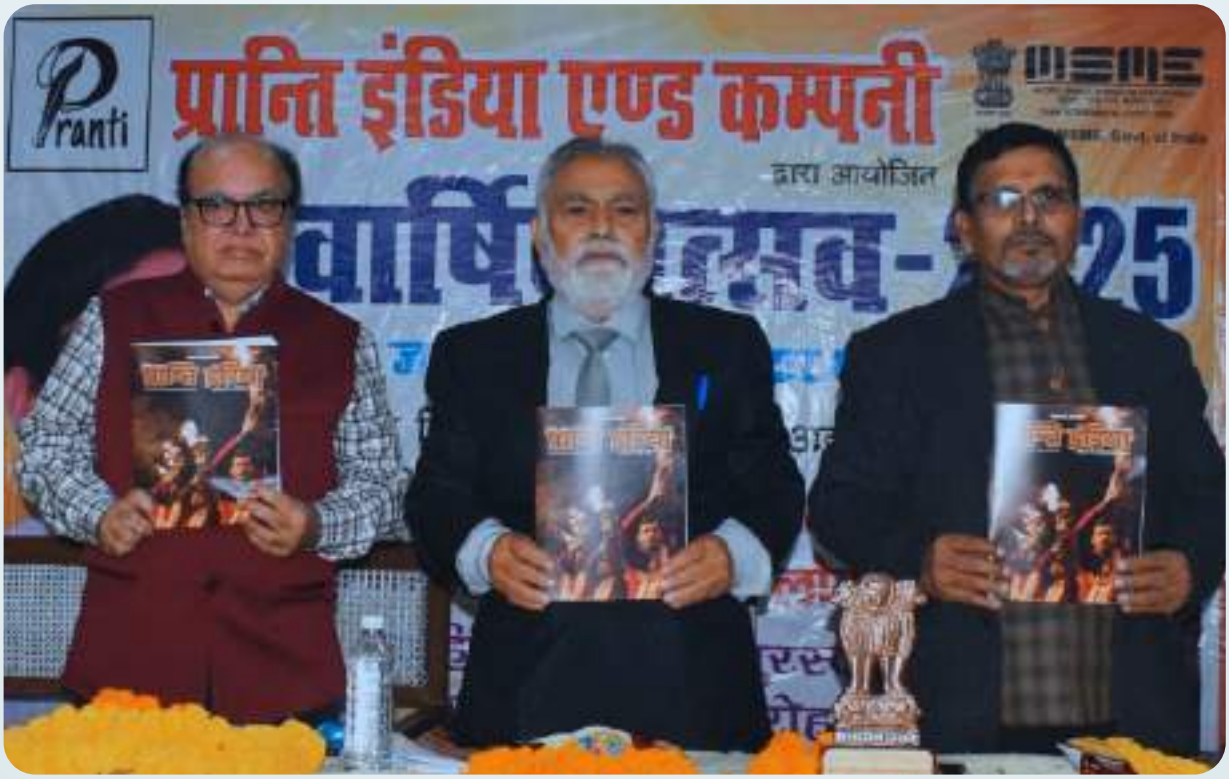

कृपया www.prantiindia.com/subscription पर जाएं।

अपनी प्रति बुक करने के लिए व्हाट्सप्प करें-

+91 94-535354-95

FREE DELIVERY

बिहार बोर्ड द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए प्रान्ति इंडिया के तत्वावधान में ए. के. प्रसाद द्वारा अपनी निपुणता की कुंजी को स्याही और अक्षरों के जरिए दिगंत टॉनिक पुस्तक में विभूषित करने का सफल प्रयास किया गया हैं। इस पुस्तक में गद्यखण्ड व पद्यखण्ड के पाठ्याधारित सारांश, महत्वपूर्ण तथ्य और स्मरणीय वन-लाइनर समेत आवश्यक पाठ्य सामग्री समाहित की गई है। इस अनुपम पुस्तक की सृजन की अवधि में पूर्ण लगन से कठिन परिश्रम की गयी हैं, ताकि परीक्षार्थी सही मार्गदर्शन में अपनी ऊर्जा को व्यय करके शानदार सफलता अर्जित कर सकें। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपको यह संकलन अवश्य पसंद आएगा, जो आपकी परीक्षा में सहायक होगा। हम आपकी सफलता और उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

–टीम: प्रान्ति इंडिया